भारत में महिला सशक्तिकरण : आर्थिक नीतियों एवं कार्यक्रमों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

एम.फिल. (स्त्री अध्ययन) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंध

सत्र: 2012-13

शोध निर्देशक

डॉ. प्रशांत खत्री

अनुसंधान अधिकारी

अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ

शोधार्थी

ऋचा सिंह

स्त्री अध्ययन विभाग

स्त्री अध्ययन विभाग

(संस्कृति विद्यापीठ)

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442005

(महाराष्ट्र) भारत

अनुक्रमणिका

आमुख 02-04

अध्याय एक 05-14

1.0 नारीवादी शोध प्रविधि
1.1 उपकल्पना
1.2 शोध का उद्देश्य
1.3 शोध प्रविधि

अध्याय दो 15-25

2.0 प्रस्तावना
2.1 महिला सशक्तिकरण के मापक
2.2 महिला सशक्तिकरण का इतिहास
2.3 भारत में महिलाओं की स्थिति

अध्याय तीन 26-33

3.0 क्षेत्र परिचय
3.1 क्षेत्र स्थिति
3.2 महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण

अध्याय चार 34-93

4.0 महिला सशक्तिकरण की नीतियों एवं कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण 1950 से
4.1 पंचवर्षीय योजनाएं एवं महिला सशक्तिकरण
4.2 भारत में महिलाओं की स्थिति पर समिति
4.3 महिला सशक्तिकरण हेतु सरकार की प्रमुख आर्थिक नीतियाँ एवं कार्यक्रम
4.4 आकड़ों का तालिका प्रदर्षन
4.5 महिला सशक्तिकरण की आर्थिक नीतियों एवं कार्यक्रमों के निष्पादन के पश्चात महिलाओं की स्थिति
4.6 महिला सशक्तिकरण में राज्यों का निष्पादन

अध्याय पाँच 94-116

5.0 स्वतंत्रता उपरांत नीतियों का स्वरुप और महिलाओं पर प्रभाव
5.1 महिलाओं के मुददों पर राज्य का दृष्टिकोण
5.2 पंचवर्षीय योजनायें एवं महिलायें
5.3 सशक्तिकरण की नीति एवं कार्यक्रमों में महिलायें

उपसंहार 117-124

संदर्भ ग्रंथ सूची

आमुख-

महिला विकास एवं सशक्तिकरण एक ऐसा मुददा है, जिसने पिछले दो दशकों से विश्व बुद्धजीवि, समाज सुधारकों, सामाजिक चिंतकों, नीति निर्धारकों, नारीवादी विचारकों और विकास में रुचि रखने वाली संस्थाओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। आज पूरे विश्व को यह बात समझ में चुकी है कि वर्तमान समय में संवृद्धि के लक्ष्य को महिलाओं को मुख्य धारा से पीछे छोड़कर प्राप्त नहीं किया जा सकता है, और साथ ही महिला आंदोलनों के फलस्वरुप तथा महिलाओं के अपने तर्कों के कारण, अपने को साबित कर देने फलस्वरुप यह स्वीकार किया जाने लगा है कि 'विकास' की प्रक्रिया में महिलाओं की पूर्ण भागेदारी आवश्यक है। वर्तमान समय में महिलाओं का मुददा एक समकालीन मुददा है, जिसके कारण यह अकादमिक क्षेत्र में भी अपनी एक पहचान बना चुका है, महिला अध्ययन के रूप में यह एक अंतर अनुशासनिक विषय के रूप में उभरा है तथा अन्य विषयों से समायोजन करते हुऐ उनके साथ चल रहा है जो महिला मुददों को नारीवाद को, जेंडर आदि प्रश्नों को एक नयी पहचान दे रहे हैं। सदियों से उत्पी़डित विश्व की लगभग 'आधी जनसंख्या महिला' के कल्याण व विकास की लहर 1970 के दशक में पूरे विश्व में दौड़ गयी। महिलाओं का कल्याण एवं विकास अन्तरराष्ट्रीय मुददा बन गया, और धीरे धीरे महिलाओं में भी उनके अपने अधिकारों की सजगता बढ़ी तथा अपनी स्थिति में सुधार के प्रति आशा की किरण का संचार हुआ। 1975 को "अन्तरराष्ट्रीय महिला वर्ष" के रूप में मनाये जाने के कारण विश्व मंच पर महिला संबंधी मुददे प्रकाश में आये। विश्व भर में महिला विकास एवं सशक्तिकरण आंदोलन जोर पकड़ने लगा। इन्हीं आंदोलनों के माध्यम से आधारभूत प्रश्नों पर महिलाओं की मांगे प्रतिबिम्बित होने लगी। जिनकी पूर्ती के लिये अनेक नीतियों व कार्यक्रमों को प्रारंभ किया गया।

और 'महिला' 'महिला संबंध मुददे' विश्व भर में अनुसंधान कार्यों का भी एक प्रमुख विषय बन गये।

परिणाम स्वरुप विश्व पटल पर महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका, विभिन्न समाजों में उनकी स्थिति, उनकी प्रवृत्ति, उनके विचार तथा दृष्टिकोण को समझने का प्रयास किये जाने लगा। समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक इत्यादि विभिन्न पहलुओं में उनकी

आवश्यकताओं, महत्व तथा योगदान को समझने हेतु अनेक अनुसंधान शुरू किये गये। उनकी स्थिति में सुधार करने तथा विकास में उनकी निर्णायक भूमिका को सिद्ध करने व बढ़ाने हेतु राज्य एवं सरकारों द्वारा राजनीतिक एवं आर्थिक स्तरों पर अनेक कार्यक्रम व नीतियों का निर्माण प्रारंभ हुआ तथा इसको 'मतो की राजनीति' में सम्मिलित करके स्वयं को अधिक प्रजातांत्रिक व कल्याणकारी सरकार सिद्ध करने की चेष्टा की भी जाने लगी। महिला विषयक विश्लेषण तथा सिद्धांत अत्याधिक महत्वपूर्ण विषय बन गये जिसमें न केवल महिलाओं के उत्थान के संबंध में प्रश्न किये अपितु समाज को भी प्रश्नित दृष्टि से देखा गया।

मैंने अपने इस शोध को पांच अध्यायों में विभक्त किया है। शोध का प्रथम अध्याय 'शोध प्रविधि' से संबंधित है जिसमें नारीवादी शोध प्रविधि का उल्लेखकर उसकी विशेषताएं बतायी गई है, तथा किन-किन संदर्भों में नारी वादी शोध प्रविधि समाजशास्त्रीय शोध प्रविधि से अलग होती है, इसको स्पष्ट किया गया है। उसके पश्चात् उपकल्पना तथा उद्देश्यों का उल्लेख किया गया है, तथा प्रयोग की गई शोध प्रविधि के बारे में बताया है। द्वितीय अध्याय में प्रस्तावना दी गयी है, जिसमें सशक्तिकरण के मायने क्या हैं तथा प्रमुख अवधारणाओं से आशय को प्रकट किया गया है। महिला सशक्तिकरण का इतिहास तथा भारत में महिलाओं की स्थिति को द्वितीय अध्याय के अंतिम भाग में दिया है। तीसरा अध्याय क्षेत्र अध्ययन का है जिसमें शोध के दौरान किये गये कार्य तथा प्राप्त परिणामों का विश्लेषण है। शोध का चौथा अध्याय, जो कि शोध के प्रमुख अध्यायों में से एक है, इसमें सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए चलायी जाने वाली नीतियों तथा कार्योक्रमों का संक्षिप्त विवरण दिया है। उसके पश्चात आकड़ों तथा उसके विश्लेषण के माध्यम से महिलाओं की वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। पांचवां अध्याय भी शोध का महत्वपूर्ण भाग है। जिसमें स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही सरकार का विकास के प्रति क्या नजरिया रहा है, किस प्रकार से विभिन्न योजनाओं एवं नीतियों में महिलाओं के पक्ष को रखा गया है इसे स्पष्ट किया है तथा सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण हेतु चलायी जाने वाली नीतियों तथा कार्यक्रमों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है।

अपने शोध कार्य को पूरा करने के लिये मैंने अधिकांशत: द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया है। महिला सशक्तिकरण की वास्तविकता को जानने एवं महसूस करने के लिये मैंने क्षेत्र

कार्य भी किया। और इसके किये मैंने उत्तर प्रदेश के जनपद इलाहाबाद के विकास खण्ड मउआइमा में स्थित ग्राम सभा कठवर/परवेजपुर को चुना। जहाँ मैंने शोध प्रविधि की अवलोकन विधि को चुना और असहभागी अवलोकन एवं साक्षात्कार (अनौपचारिक) किया। तथा यह जानने का प्रयास किया कि वहां की महिलाओं की वास्तविक स्थिति परिवार, समाज, रोजगार तथा संसाधनों पर नियंत्रण आदि में कैसी है। यह जानने का प्रयास भी किया कि वहाँ की महिलाओं को स्वयं के लिये चलायी जाने वाली आर्थिक परियोजनाओं का कितना ज्ञान है तथा सरकार ने वहाँ जागरूकता बढ़ाने के लिये क्या प्रयास किये हैं। इस लघु शोध का लक्ष्य 'महिला विकास कार्यक्रमों का अध्ययन तथा महिला सशक्तिकरण में उनकी पर्याप्तर्ता और कुशलता को आंकना है। मैंने अपने इस शोध में समाज के आवश्यक, अविभाज्य, किंतु पिछड़े हुए अंग को सशक्त व विकसित बनाने हेतु सरकार द्वार चलायी जा रही 'महिला सशक्तिकरण की आर्थिक नीतियों पर' प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है तथा उनका विश्लेषणात्मक मूल्यांकन करना ही मेरे 'लघु शोध' का प्रमुख उद्देश्य है। शोध को पूरा करने की समय सीमा अत्यंत सीमित मात्र चार महीने होने के कारण मेरे शोध की सीमाएं अत्यंत संकुचित हो गयी। परन्तु फिर इस सीमित अवधि में गुणात्मक कार्य करने का प्रोत्साहन मुझे मेरे 'शोध निर्देशक' डॉ. प्रशांत खत्री जी से मिला और उनके सहयोगात्मक निर्देशन से ही यह शोध कार्य पूरा हो पाया। अत: मैं डॉ. प्रशांत खत्री जी आभारी हूँ।

ऋचा सिंह